International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

पर्यावरणीय शिक्षा का आज के सन्दर्भ में एक अध्ययन

डॉ, हरीश कुमार असिस्टेन्ट प्रोफेसर इतिहास
राजकीय महाविद्यालय रूपवास

सारांश पर्यावरण शिक्षा आज बहुत आवश्यक हो गई है, मानव की कल्पना की तुलना में पर्यावरण बहुत तेजी से आज दूषित हो रहा है। ज्यादातर मानव गतिविधियों के कारण प्रदूषित होते हैं। जिससे वैश्विक तथा क्षेत्रीय दोनों स्तर प्रभावित होते हैं। ओजोन स्तर का पतला होना और ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में वृद्धि वैश्विक स्तर पर होने वाले नुकसानों के उदाहरण हैं। जबकि जल प्रदूषण, मृदा अपरदन, मानव गतिविधियों द्वारा रचित कुछ क्षेत्रीय परिणामों में से एक हैं और उनके द्वारा पर्यावरण को भी अत्याधिक प्रभावित किया जाता है। पर्यावरण का अर्थ इस प्रकार है। पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और 'आवरण' से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से घेरे हुए होते है। अर्थात् प्रकृति में जो भी चारों ओर परिलक्षित है। तथा वायु, मृदा, पेड़ तथा पौधे तथा प्राणी सभी पर्यावरण के अंग हैं। डवर्थ के अनुसार ''पर्यावरण शब्द का अर्थ उन सभी गहरी शक्तियों एवं तत्त्वों से है जो व्यक्ति को आजीवन प्रभावित करती हैं।'' रॉस जे. एम. के अनुसार ''वातावरण एक बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करता है।'' एनास्टासी के अनुसार, ''पर्यावरण वह प्रत्येक वस्तु है जो जीन्स के अतिरिक्त व्यक्ति को प्रभावित करते है। सी. सी. पार्क के अनुसार "मनुष्य एक विशेष स्थान पर विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है उसे पर्यावरण कहा जाता है।'' पर्यावरण अध्ययन परिवेश के सामाजिक और भौतिक घटकों को अन्तःक्रियाओं का अपमान घटक मिलकर ही हमारे सम्पूर्ण परिवेश का निर्माण करते हैं। सामाजिक घटकों में संस्कृति जिसके अन्तर्गत भाषा, मूल्य, दर्शन, आदि आते हैं तथा प्राकृतिक घटकों में हवा, पानी, मिट्टी, धूप, पशु–पक्षी, खनिज लवण, जंगल, वनस्पति, इत्यादि शामिल पर्यावरण अध्ययन में हम एक और मानव एवं निर्मित समाज का अध्ययन करते हैं। दूसरी ओर प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों तथा उनकी कार्य प्रणाली का अध्ययन किया जाता है।

प्रस्तावना पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य तात्कालिक परिस्थितियों को देखते हुए अत्यन्त आवश्यक है। यदि अब नहीं चेतेंगे तो हमारी प्रकृति में पाये जाने वाले अनमोल रत्न जैसे कि जल, खनिज लवण, वायु समाप्त हो जायेंगे तथा मनुष्य अपनी आगामी पीढ़ी को क्या देंगे? अतः पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य उन सभी प्राकृतिक संसाधनों को बचाना है। अतः हमें अपने अध्ययन में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित करना चाहिए। यदि शिक्षा का उद्देश्य समझ का विकास है तो प्राथमिक शिक्षा में हम उस विकास का आधार तैयार कर सकते हैं तथा पर्यावरण अध्ययन वह क्षेत्र है जो उपर्युक्त विषयों को समाहित करता है। हमारे आकाश मण्डल में 9 ग्रह हैं, लेकिन जीवन सिर्फ धरती पर ही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है, धरती पर एक अनुकूल वायुमण्डल का होना। हमारी धरती विभिन्न गैसों से मिलकर बनी है, जिसे वायुमण्डल कहते हैं। यह वायुमण्डल हमें सूर्य की पराबैंगनी किरणों से भी बचाता है तथा धरती का तापमान भी नियन्त्रित रहता है लेकिन आधी सदी बीतने के बाद भी इसका प्रभाव नगण्य ही रहा। इंटर–गवर्नमेंटल पैनल फॉर क्लाइमेट चेंज (आई पी सी सी) वर्किंग ग्रुप की रिपोर्ट "क्लाइमेट चेंज 2021: द फिजिकल साइंस बेसिस" शीर्षक से जारी हुई। रिपोर्ट में कहा गया कि वैश्विक तापमान में 2011–2020 के बीच 1.09 डिग्री सेल्सियस वृद्धि देखी गई, संभावना व्यक्त की गई है कि इसमें मिश्रित ग्रीन

हाउस गैस का योगदान 1.0 से 2.0 डिग्री सेल्सियस रहा। इसी तरह की रिपोर्ट भारत में भी दर्ज की गई इंस्टिट्यूट ऑफ एनवायर्नमेंटल जियोसाइंसेज और डार्टमाउथ कॉलेज के शोधकर्ताओं के मुताबिक'' जहां हिमालय के हिम नदी में अनुमान से ज्यादा बर्फ है, वहीं दूसरी तरफ एंडीज के पहाड़ों पर पिछले अनुमानों से लगभग एक चौथाई कम बर्फ है। यदि वैश्विक स्तर पर देखें तो दुनिया भर के हिम नदी में पिछले अनुमानों की तुलना में करीब 20 फीसदी कम बर्फ है जो कि दुनिया भर में पीने के पानी, बिजली उत्पादन, कृषि और अन्य उपयोगों के लिए जल उपलब्धता पर असर डाल सकती है'', ''जैसे–जैसे वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है यह ग्लेशियर पहले की तुलना में कहीं ज्यादा तेजी से पिघल रहे हैं। इससे पहले जर्नल साइंटिफिक रिपोर्टस में प्रकाशित एक शोध से पता चला है कि हिमालय के ग्लेशियर पहले के मुकाबले 10 गुना ज्यादा तेजी से पिघल रहे हैं।''कुछ महीने पूर्व पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने लोकसभा में एक लिखित सवाल के जवाब में बताया कि हिंदुकुश हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने की औसत दर 14.9–15.1 मीटर प्रति वर्ष रही। इंडस बेसिन में यह दर 13.2–12.7 मीटर प्रति वर्ष, गंगा में 15.5–14.4 मीटर प्रति वर्ष और ब्रह्मपुत्र में 20.2–19.7 मीटर प्रति वर्ष रही । फारेस्ट फायर इस पीड़ा को कोई कैसे भूल सकता है ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग ने 48 करोड़ से ज्यादा जीवों को भस्म कर दिया इन बेजुबान की आती तस्वीरों से भी दिल दहलने लगता था, यह पीड़ा मात्र ऑस्ट्रेलिया तक सीमित नही है भारत अमेरिका समेत विकसित और विकासशील देश भी आज नही तो कल इस पीड़ा को प्राप्त होंगे, क्योंकि विकास विनाश का पर्याय बन रहा है। भारतीय वन सर्वेक्षण की रिपोर्ट कहती है कि राज्य के जंगलों में जून 2018 से नवम्बर 2019 तक 8 महीनों में वनों में कुल 16 हजार बार आग लगी। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर महीने बरसात के हैं, जब जंगलों में आग की घटनाएं नहीं होती।[3] खैर वन संरक्षण अधिनियम, 1980 और राष्ट्रीय वन नीति, 1988 यही धराशयी हो जाते हैं। साल 2008 भारत सरकार ने गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी के तौर पर घोषित किया साथ ही गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण के गठन का भी निर्णय लिया गया। उल्लेखनीय है कि ये राजीव गांधी के बतौर प्रधानमंत्री विजन के तौर पर इसे आगे बढ़ाया गया। विक्त बिताया गया 2014 में सरकार बदली 20 हजार करोड़ रुपए के बजट से फ्लैगशिप प्रोग्राम नमामि गंगे को लॉन्च किया गया जिसका उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को कम करना और नदी को पुनर्जीवित करना था। इसके लिए केंद्र सरकार ने गंगा कायाकल्प के नाम से अलग से विभाग भी बनाया गया। जो इस प्रकार है। गंगा 2700 किमी लंबाई, 50 करोड़ से ज्यादा की आबादी, 11 राज्य गंगा बेसिन, 140 प्रजातियों की मछलियां, 2 बायो स्पियर सुंदरबन और नंदादेवी, 5 दुर्लभ नस्ल के जीव आदि पर असलियत कुछ और बनती जा रही है जिस गंगा में स्नान को लोग पुण्य मानते थे, आज उसमें स्नान भयंकर बीमारियों की वजह बनता जा रहा है गंगाजल में फॉस्फेट, क्रोमियम, नाइट्रेट की तादाद बढ़ती ही जा रही हैं, डॉलफिन की संख्या में भी कमी देखने को मिली है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की चेतावनी के बाद भी गंदे नाले गंगा नदी में मिल रहे हैं। बात केवल गंगा की नही है यमुना नदी को देख लीजिए जो नाला बनकर रह गई है। करोड़ों रुपए खर्च होने के बाद भी अभी तक कोई परिणाम क्यों नही निकला? खेर सब क्लीन स्वीप खेल रहे हैं पर्यावरण–शिक्षा की शिक्षण–विधियाँ एवं साधन पर्यावरण–शिक्षा हेतु प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधियाँ एवं साधन विभिन्न प्रकार के हैं। यहाँ पर्यावरण–शिक्षा की शिक्षण–विधियों और साधनों पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है। (अ) शिक्षण–विधियाँ पर्यावरण–शिक्षा की निम्नलिखित शिक्षण विधियाँ हैं– 1. कक्षा वादः विवाद–इसके अन्तर्गत किसी प्रकरण अथवा समस्या के विषय में कक्षा में विचार–विमर्श किया जाता है। इस विचार–विमर्श के फलस्वरूप पर्यावरण के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट किया जाता है। 2. छोटी सामूहिक प्रयोगशालाएँः छोटी सामूहिक प्रयोगशालाएँ

पर्यावरण–शिक्षा के व्यापक अध्ययन हेतु विशेष उपयोगी हैं। इसके अन्तर्गत कक्षा को छोटे–छोटे समूह में बाँट दिया जाता है तथा प्रत्येक समूह की एक परियोजना निर्धारित कर ली जाती है। यह समूह इस परियोजना पर कार्य करता है। उदाहरण के लिए यदि किसी समूह को स्थानीय तालाब की परियोजना निर्धारित करनी है तो वह समूह इससे सम्बन्धित निम्नलिखित विषयों पर अध्ययन करेगा अर्थात् पर्यावरण के विविध पक्षों, इसके घटकों, मानव के साथ अंतर्संबंधों पारिस्थितिक–तंत्र, प्रदूषण विकास, नगरीकरण, जनसंख्या आदि का पर्यावरण पर प्रभाव आदि की समुचित जानकारी देना। यह शिक्षा मात्र विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक ही सीमित न होकर जन–जन को देना आवश्यक है। जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण एवं जीवन में उसके महत्व को नहीं समझेगा उस समय तक वह अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझ सकेगा, जो उसे पर्यावरण के प्रति निभाना है। पर्यावरण शिक्षा एक पुनीत कार्य है, जिसे करके एवं उसके मार्ग पर चलकर वर्तमान के साथ भविष्य को सुंदर बना सकते हैं, मानव की अनेक त्रासदियों से रक्षा कर सकते हैं, प्राकृतिक आपदाओं को कम कर सकते हैं, विलुप्त होते जीव–जंतुओं व पादपों की प्रजातियों की रक्षा कर सकते हैं और जल, वायु एवं भूमि को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं पर्यावरण शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा पर्यावरण तथा जीवन की गुणवत्ता की रक्षा की जा सकती है। पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता एक ज्वलंत प्रश्न है कि पर्यावरण की शिक्षा क्यों? क्या पूववर्ती शिक्षा में पर्यावरण सम्मिलित नहीं था या उसकी आवश्यकता नहीं थी? वास्तव में पृथक से पर्यावरण शिक्षा का दौर विगत 24 वर्षों में ही प्रारंभ हुआ है और विगत दशक में यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव–पर्यावरण के अंतर्संबंधों की व्याख्या करना तथा उन संपूर्ण घटकों का विवेचन करना है जो पृथ्वी पर जीवन को परिचालित करते हैं इसमें मात्र मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव–जंतु एवं वनस्पति भी सम्मिलित हैं। मानव, तकनीकी विकास एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों से जो पारिस्थितिकी चक्र बनता है और वह संपूर्ण क्रिया–कलापों और विकास को नियंत्रित करता है। यदि इनमें संतुलन रहता है तो सब कुछ सामान्य गति से चलता रहता है, किंतु किसी कारण से यदि इनमें व्यतिक्रम आता है तो पर्यावरण का स्वरूप विकृत होने लगता है और उसका हानिकारक प्रभाव न केवल जीव जगत् अपितु पर्यावरण के घटकों पर भी होता है। वर्तमान में यह क्रम तीव्रता से हो रहा है। औद्योगिक तकनीकी, वैज्ञानिक, परिवहन विकास की होड़ में हम यह भूल गये थे कि यह साधन पर्यावरण को प्रदूषित कर मानव जाति एवं अन्य जीवों के लिये संकट का कारण बन जायेंगे। वास्तविक चेतना का उदय तब हुआ जब विकसित देशों में यह संकट अधिक हो गया और उन्होंने इस दिशा में अपने प्रयासों को तेज कर दिया, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मैचों पर पर्यावरण चेतना एवं इसके खतरों की आवाज उठने लगी इसी के साथ 'पर्यावरण शिक्षा' का विचार भी बल पकड़ने लगा, क्योंकि इससे पूर्व पर्यावरण का विभिन्न विषयों में भिन्न–भिन्न परिवेशों में अध्ययन किया जाता था । अब यह सभी स्वीकार करते हैं कि पर्यावरण को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिये जिससे छात्रों में प्रारंभिक काल से ही पर्यावरण चेतना जाग्रत की जा सके

पर्यावरणीय शिक्षा की आज आवश्यकता इस प्रकार है (1) पर्यावरण के विभिन्न घटकों से परिचय कराना (2) पर्यावरण के घटक किस प्रकार एक–दूसरे से क्रियात्मक संबंध रखते हैं इसकी समुचित जानकारी देना (3) पर्यावरण के विभिन्न घटकों का मानव के क्रिया–कलापों पर प्रभाव का ज्ञान प्रदान करना (4) पर्यावरण प्रदूषण के स्वरूप, कारण एवं प्रभावों का ज्ञान देना (5) पर्यावरण प्रदूषण के निवारण में व्यक्ति एवं समाज की भूमिका को उजागर करना (6) पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के संबंध को स्पष्ट करना (7) पर्यावरण चेतना जगाना तथा पर्यावरण के प्रति अवबोध विकसित करना (8) पर्यावरण

संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु साहित्य का सृजन करना (9) विभिन्न विषयों में पर्यावरण शोध की व्यवस्था करना (10) क्षेत्रीय पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन एवं उनके निराकरण के उपाय प्रस्तुत करना आदि । संक्षेप में, पर्यावरण शिक्षा वह साधन है जिससे बाल्यकाल से ही पर्यावरण का सही ज्ञान दिया जा सकता है अर्थात् पर्यावरण के प्रति चेतना जगाई जा सकती है इसके पश्चात् पर्यावरण की .समस्याओं का ज्ञान एवं उनके निराकरण का ज्ञान दिया जाना आवश्यक है और इसके साथ ही शोध कार्य द्वारा इस दिशा में नवीन तकनीक का विकास किया जाना चाहिये। यह सभी कार्य पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से संपन्न किये जा सकते हैं पर्यावरणीय शिक्षा का रूप पर्यावरणीय शिक्षा को आज प्रभावशाली बनाने हेतु इसकी विषय–वस्तु का चयन सावधानी पूर्वक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करना आवश्यक है। इसके प्रारूप के निर्धारण में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का सुनियोजित समावेश होना चाहिये तथा शिक्षा के स्तर के अनुरूप इसकी विषय–वस्तु में भी विकास आवश्यक 1981 में 'पर्यावरण शिक्षा' पर भारतीय पर्यावरण संस्था ने जो सुझाव दिये उनका–सार निम्नांकित हैं: पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप पर्यावरण नीति के विकास में सहायक हो तथा मानव के प्राकृतिक वातावरण के प्रति संबंधों का द्योतक हो। इसके अध्ययन से प्रत्येक व्यक्ति में यह भावना विकसित होनी चाहिये कि वह भी पर्यावरण का अभिन्न अंग है। माध्यमिक स्तर तथा विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा में समन्वय हो तथा उसके अध्ययन से छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता का विकास होना चाहिये। इसके द्वारा पर्यावरण की विभिन्न संकल्पनाओं तथा सिद्धांतो का ज्ञान होना चाहिये पर्यावरण शिक्षा हेतु वर्तमान में संलग्न अध्यापकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, नियोजकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, राजनीतिज्ञों, प्रशासकों का दिशा–निर्देश (री–ओरिएन्टेशन) कार्यक्रम प्रारंभ किया जाये। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को मानव–पर्यावरण के संबंधों का अध्ययन कराया जाये तथा उनसे पर्यावरण के किसी पक्ष पर रिपोर्ट तैयार करवाई जाये। प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरणीय जागरूकता तथा प्रशिक्षण देना चाहिये। समन्वित ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में पर्यावरणीय विचार का समायोजन होना चाहिये। इसके माध्यम से स्थानीय एवं क्षेत्रीय पर्यावरण के उपयोग, समस्याओं और उनके निराकरण का ज्ञान कराया जाये। उपर्युक्त निर्देश संकेत मात्र हैं इनको पूर्ण रूप से विकसित करने की आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप मूलतः भारतीय परिवेश में ही प्रस्तुत किया जा रहा है क्योंकि प्रत्येक देश की परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं यद्यपि मूल स्वरूप समान ही होता है। पर्यावरण शिक्षा का प्रारंभ बाल्यकाल की प्राथमिक, यहाँ तक कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा से ही हो जाता है । 1975 एवं उसके पश्चात् 'भारतीय शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्' ने अपने विभिन्न पादयक्रमों में पर्यावरण शिक्षा पर विभिन्न तथ्य, विषय वस्तु आदि का प्रतिपादन किया है । इसी क्रम में विज्ञान के विभिन्न विषयों में पर्यावरण संबंधी सामग्री का समावेश किया गया। उनके अनुसार प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों में विज्ञान के उपयोग एवं वैज्ञानिक सोच का विकास होना चाहिये। बच्चे में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिये तथा किस प्रकार गंदगी से बचा जा सके इसका भी पर्याप्त ज्ञान होना चाहिये। इस समय यदि बच्चे को यह ज्ञात हो जाये कि वह जीवन भर न केवल उनसे अलग रहेगा अपितु अपने परिवार एवं समाज के वातावरण को भी शुद्ध रखेगा। इसके पश्चात अर्थात् मिडिल स्कूल तक पोषण, स्वास्थ्य, जनसंख्या, कृषि, उद्योग, परिवहन आदि गतिविधियों से परिचित कर संसाधन संरक्षण के प्रति ज्ञान दिया जाना चाहिये ।जबकि माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण की समस्याओं एवं प्रदूषण आदि का न केवल परिचय अपितु कारण एवं निदान का ज्ञान देना आवश्यक है। इस स्तर तक पर्यावरण शिक्षा को विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान दोनों ही पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना चाहिये। तत्पश्चात् अर्थात् महाविद्यालय स्तर पर इसे विशिष्ट विषय के रूप में रखा जाये, जिससे प्रशिक्षित स्नातक उपलब्ध हों। विश्वविद्यालय स्तर पर शोध कार्य पर बल

दिया जाना चाहिये। पर्यावरण शिक्षा किसी एक विषय से संबंधित न होकर अंतः विषयी विषय है। यह प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान दोनों में महत्व रखता है। इसका अध्ययन जहाँ जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन, अभियांत्रिकी में होता है वहीं समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रजातीय विज्ञान, भूगोल आदि में भी महत्त्वपूर्ण है। पर्यावरण का भौगोलिक अध्ययन अति महत्वपूर्ण है क्योंकि भूगोल एक ऐसा विषय है जो प्रारंभ से ही मानव–पर्यावरण के अंतर्संबंधों का अध्ययन करता आया है और वर्तमान समय में पर्यावरण के विविध पक्षों का क्षेत्रीय विवेचन भूगोल की विषयवस्तु का एक प्रमुख पक्ष है।

आज देश के पर्यावरण को कैसे बचाया जा सकता है जैसे (1) पर्यटन स्थलों, अभयारण्यों का विकास, (2) प्रदूषण नियंत्रण के उपाय, (3) स्वास्थ्यवर्द्धक केन्द्रों का विकास, (4) नगरों में स्वच्छ पर्यावरण, (5) जनसंख्या एवं पर्यावरण में समन्वय, (6) पर्यावरण अधिनियमों का नियमन, (7) पर्यावरण चेतना का विकास या पर्यावरण संरक्षण आंदोलन। वास्तव में पर्यावरण शिक्षा एक विशद् विषय है। इसे वर्तमान में एक पृथक विषय के रूप में अर्थात् पर्यावरण विज्ञान के रूप में भी विकसित किया गया है। सामान्य पादयक्रमों के अतिरिक्त विशिष्ट प्रशिक्षण के अंतर्गत डिग्री एवं डिप्लोमा भी इसमें दिये जा रहे हैं। विशिष्ट अध्ययन से विशेषज्ञों का विकास होगा, जो आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों में पर्यावरण संबंधी शोध कार्य पर्याप्त किया जा रहा है। इन सभी कार्यों में समन्वय कर उन्हें उपयोगी बनाया जाना चाहिये, साथ ही वास्तविक शोध कार्य हो इसके लिये मूल्यांकन की भी आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा का एक अन्य पहलू सामान्य नागरिकों को शिक्षा देना है। विद्यालयों के अतिरिक्त समस्त जनता को इसके संबंध में साधारण भाषा में, लोक गीतों, नाटकों, पोस्टरों आदि के माध्यम से शिक्षित किया जाना आवश्यक है। इसे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का एक अंग बनाया जाना चाहिये तथा शिक्षण संस्थाओं में चलाये जाने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवा कार्यक्रम के अंतर्गत भी इसे किया जा सकता है। पर्यावरण का मानव जीवन में विशेष महत्त्व है। उसका अपना प्रभाव होता है। मानव संस्कृति और मानव जीवन के विकास, उन्नयन में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान पर्यावरण का ही रहता है। पर्यावरण प्रकृति का वह घटक है जो मानव जीवन से सम्बन्धित है और उसे प्रभावित करता है। पर्यावरण और प्रकृति में वस्तुतः कोई भी अन्तर नहीं है जो मानव जीवन को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करता है। अतः पर्यावरण तथा प्रकृति एक–दूसरे के द्योतक हैं। यदि पर्यावरण में परिवर्तन होगा तो मनुष्य एवं सम्पूर्ण जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो जाएगा। शिक्षा की भाँति पर्यावरणीय शिक्षा का भी अपना स्वरूप होता है। पर्यावरणीय शिक्षा की प्रकृति पर निम्नलिखित बिन्दु प्रकाश डालते हैं समाजीकरण में आज केवल परस्पर सहयोग, भ्रातृत्व भाव का विकास सहकारिता जैसे गुणों को ही सम्मिलित नहीं किया जाता है अपितु समाजीकरण का एक गुण पर्यावरण के प्रति चेतना का विकास भी है। आज पारिस्थितिक असंतुलन, पर्यावरण प्रदूषण आदि सम्पूर्ण प्राणी समाज के अस्तित्व के खतरा बना गया है। अतः आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य पर्यावरण हास को नियंत्रित में सहयोग करें। इस कार्य में पर्यावरण शिक्षा ही इस सामाजिक गुण का विकास कर सकती है।

निष्कर्ष आज के दौर के बढ़ते प्रदूषण और पेड़ों की कटाई ने पर्यावरण के लिए खतरा पैदा कर दिया है। इसी कारण आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या भी बढ़ रही है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मानव पानी या फिर पर्यावरण ऑक्सीजन न मिलने के कारण विलुप्त होने के कगार पर पहुँच जायेंगे। लेकिन उस समय मानव को बचाने वाला कोई नहीं होगा। पर्यावरणीय अध्ययन को आज एक नवीनतम अनुशासन के रूप में अपनाया जा रहा है। वर्तमान में फैले प्रदूषण द्वारा मानव को सचेत करना एवं संकेत देना प्रारम्भ कर दिया है कि हम सभी पर्यावरण के महत्त्व को जाने

तथा स्वीकार करें। पर्यावरण को संरक्षित करते हुए हम सम्पूर्ण मानव जाति को भी संरक्षण प्रदान कर सकते हैं। विभिन्न प्राकृतिक आपदाओंय जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा, भूस्खलन ने मानव जाति को विवश कर दिया है कि वह पर्यावरण के उपयोग एवं महत्त्व को समझें तथा उसके संरक्षण के लिए ठोस तथा समुचित नियन्त्रण के उपायों पर विशेष रूप से बल देना प्रारम्भ करें, जिससे मानवीय सामाजिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके। अतः पर्यावरण अध्ययन के महत्त्व पर विशेष स्थान देते हुए व्यावहारिक रूप में अध्ययन पर बल दिया जाना चाहिए हमारी कल्पना की तुलना में पर्यावरण आज बहुत तेजी से दूषित हो रहा है। ज्यादातर मानव गतिविधियों के कारण प्रदूषित होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मेलोन, 1999 के.एच., पर्यावरण एक्टिविस्ट के रूप में पर्यावरण शिक्षा शोधार्थी, एंवयार्मेंटल एजुकेशन रिसर्च 5 (2): पृ0 163–177
- पामर, जे.ए, 1998, 21वीं सदी में पर्यावरण शिक्षाः सिद्धांत, अभ्यास, प्रगति और वादा, राउतलेज पृ 53
- विज्ञान (मक.), 1997, पर्यावरण शिक्षा, विज्ञान, की पूर्ण जांच व मरम्मत, पृ0 276:361.
- स्मिथ, जे.सी.2006, एन्वायरमेंट एंड एजुकेशनः अ व्यू ऑफ चंगिंग सीन, पर्यावरण शिक्षा शोध 12(3,4) पृ0 247–249
- बिल क्रोनन, विलियमक्रोनन.नेट Archived 2010–11–18